"डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद"

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

की पीएच. डी. (हिंदी) उपाधि हेतु

शोध प्रबंध की अंतिम रूपरेखा

शोध का विषय

"स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों पर बौद्धदर्शन का प्रभाव"

शोध-छात्र

अंकुश मसाजी गायकवाड

हिंदी विभाग,

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद.

शोध-निर्देशक

डॉ.हणमंतराव पाटील

सहयोगी प्राध्यापक, हिदी विभाग,

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

जुलाई - २०१४

"स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों पर बौद्धदर्शन का प्रभाव"

अनुसंधान की भूमिका :

महाविद्यालयीन जीवन से लेकर विश्वविद्यालय जीवन में स्नातकोत्तर कक्षा तथा विद्यापती उपाधि हेतु अध्ययन करते समय हिन्दी साहित्य की कई कृतियों का अध्ययन किया। विशेषतः हिंदी नाट्य विधा के प्रति अन्य विधा से अधिक लगाव रहा है। नाट्यविधा दृश्यविधा होने के करण इसका सीध असर मनोमस्तिष्क पर छा जाता है। इसलिए शिक्षा के दौरान 'स्कंन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'भारत दुर्दशा', 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ का एक दिन', 'राजश्री', 'अजातशत्रु', 'अंधेर नगरी', 'धर्मराज अशोक' आदि नाट्य कृतियों का अध्ययन किया था। इस कारण नाटकों के प्रत रूचि बढ़ती गयी। इस लिए नाटकों पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा मन में निर्माण हुयी। यह सच है कि, गुरू के बिना मनुष्य का जीवन अधुरा है। मेरी मन की जिज्ञासा के संबंध में जब मैंने अपनी इच्छा गुरूवर डॉ. हणमंतराव पाटील सरजी के सामने व्यक्त की तो गुरूवर्य पाटील सरजी ने "स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों पर बौद्धदर्शन का प्रभाव" इस विषय पर अनुसंधान करने की सहमती दर्शायी।

भारतीय नाट्य परम्परा बड़ी प्राचीन है। भारतीय नाट्यशास्त्र के आदि आचार्य भरतमुनि का कथन हैं कि, हमारे जीवन की कोई-न-कोई शाश्वत अथवा कल्पित कथा की अनुकृति नाटक को में प्रदर्शित की जाती है। नाटक के द्वारा मानव जीवन को शक्ति और गति प्राप्त होती है। सामूहिक प्रतिक्रिया और प्रेरणा के साथ ही जीवन के हर पहलू को अभिनेय नाटक प्रभावित करते हैं। प्राचीन काल से ही संस्कृत प्राकृत पालि आदि भाषाओं में प्रचुर नाटकों की सर्जना हुई है। साथ ही आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास होने के कारण नाट्य परम्परा का काफी विकास हो रहा हैं। भारतेन्दू से लेकर अब तक के सभी नाटककारों ने अलग-अलग विचारधारा (तत्वज्ञान) को सामने रखकर नाटकों की सर्जना की है।

आधुनिक काल में बौद्धदर्शन (विचारधारा) से प्रभावित होकर अनेक नाटककारों ने बौद्ध तत्वज्ञान को नाटकीय रूपों में प्रस्तुत किया है। इन नाटककारों में प्रमुखतः भारतेन्दू, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, दशरथ ओझा, डॉ. रामकुमार वर्मा आदि उल्लेखनीय नाटककार है। डॉ. रामकुमर वर्मा ने कहा हैं कि -"भगवान बुद्ध ने धार्मिक क्षेत्र में एक क्रान्ति तो की हैं, उन्होंने मानव जीवन को सामान्य धरातल पर लाकर उसे शील अर्थात् सदाचार की दृढ़ नीव पर स्थपित किया। उन्होंने पृथ्वी के एक बहुत बड़े भाग को दे हजार वर्षो तक ऐसा सन्देश दिया जिसमें जाति-भेदभाव और वर्ग भेदभाव को भूलकर मानव सुख और शान्ति का अनुभव कर सके" इस दृष्टि से महात्मा बुद्ध भारत के एक बहुत बड़े महापुरूष हैं। 'पंचशील' एवं 'अष्टांगिक मार्ग' यह शब्द भगवान बुद्ध द्वारा ही प्रचलित किया गया। बुद्ध ने इन शब्दों का प्रयोग जीवन के सदाचार के अर्थ में ही प्रयुक्त किया है।

हमारा देश 'पंचशील' एवं 'अष्टांगिक मार्ग' का पालन करता है, तो देश में ऐसे युवक निर्माण होंगे जिनके सामने विश्व-कल्याण का दृष्टिकोण होगा और उनके पवित्र जीवन से हमारे देश की संस्कृति पुनःगौरव के शिखर पर प्रतिष्ठित होगी। जीवन का यह सात्विक दृष्टिकोण मानव जीवन में क्रान्ति की भूमिका प्रस्तुत करेगा और समाज, राष्ट्र अपनी मूलभूत एकता से सुख और समृद्धि की ओर अग्रेसर होगा। इसी विचार के धरातल पर हिन्दी नाटककारों ने अपने नाटकों में बौद्धदर्शन का विस्तृत विवेचन किया है। अब तक इस विषय पर बौद्धदर्शन की दृष्टि से जहाँ तक मेरी जानकारी है, कोई भी शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। यह अपने-आप में नया दृष्टिकोन है। इसलिए इस विषय को शोध विषय बनाया है।

शोध विषय का उद्देश्य :

प्राचीन काल से ही हिन्दी साहित्य का विविध अंगों से विकास हुआ है। विकास की यह प्रक्रिया आज भी कायम है। इस विकास की प्रक्रिया में नाटक साहित्य का सृजन अधिक मात्रा में हुआ है। आधुनिक काल में सर्वहारा वर्ग से लेकर अभिजात्य वर्ग तक नाटक साहित्य ही

लोकप्रिय हुआ है। जिसमें भारतीय संस्कृति के विविध अंगों के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, परिस्थितियों का लेखा-जोखा अनेक नाटककारों ने अपनी नाट्य कृतियों में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। उसी में से ही कुछ नाटकारोंने बौद्ध दर्शन से प्रभावित होकर बौद्ध तत्त्वज्ञान को अपने नाटकों का विषय बनाते हुए दिखाई देते हैं।

बौद्धदर्शन से प्रभावित सभी नाटककारों पर भगवान बुद्ध के विचारों का प्रभाव है। बुद्ध के 'अनित्यवाद', 'अनात्मवाद', 'मध्यमार्ग', 'समता', 'बंधुता', 'न्याय', 'मानवता', 'अहिंसा' आदि तत्वों का गहरा असर हिंदी नाटक तथा नाटककारों पर हुआ हैं। भगवान बुद्ध के ढाई हजार वर्ष पहले के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने सामाजिक विसंगति, जाति-भेद, वर्ण-भेद, भौतिक सुख, कर्मकांड, आत्मा-परमात्मा, मोक्ष आदि संकल्पनाओं का विरोध किया था। लेकिन वर्तमान समय में उपर्युक्त सभी समस्या विद्यमान हैं। उनका केवल स्वरूप बदल गया है। इन बदलती समस्याओं को और बुद्ध के विचारों को सामने रखते हुए हिन्दी नाटककार अपने अलग-अलग नाट्य-चरित्रों (पात्र) के माध्यम से समाज में बदलाव लाना चाहते हैं, एक सदृढ़ समाज बनाना चाहते हैं, जो अहिंसा, मानवता की धरातल पर चलने के लिए प्रेरित हो और एक शक्तिशाली समाज की निर्मिती हो।

विश्व शांती के अग्रदूत तथागत भगवान बुद्ध अपने समग्र जीवनकाल में अहिंसा करूणा, प्रज्ञा, शील, शान्ति, समता, बंधुता, न्याय, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग पर चलते रहे और अन्य को उन्हीं मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहें। ऐसे महात्मा के विचारों का एवं उनके तत्त्वज्ञान का हिंदी नाट्य साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

शोध विषय का महत्त्व एवं आवश्यकता :

वर्तमान युग विषाद मानकिसता का युग है। इसमें सभी मानवी मूल्यों का ऱ्हास होता हुआ दिखायी दे रहा है। इन्सान मानवता से दूर जाकर हिंसक रूप धारण कर रहा है। भौतिकता की दौड़ में मानवता टूटती हुई नजर आ रही है। ऐसी भीषण विपरीत परिस्थितीयों में

जीवन का सफर सुचारू ढंग से करना है तो हमें हमारे महापुरूषों के विचारों का ही सहारा लेना उचित होगा। जातिय दंगों में मनुष्य ने हिंसा को अपना लिया है। मनुष्य एक-दूसरे को मरने- मारने पर उतारू है। प्रस्तुत अनुसंधान का विषय "स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों पर बौद्धदर्शन का प्रभाव" अपने आप में बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनूठा है, क्योंकि, हम सम्राट अशोक, अजातशत्रु, बाण, प्रसेनजित, बिम्बीसार आदि राजाओं के इतिहास को जानते हैं। उन्होंने साम्राज्य स्थापित करने के लिए लाखों सैनिकों मार दिया था। उन मरे हुए सैनिकों को देखने के बाद वे समझ गये की हमने सत्ता, साम्राज्य तो प्राप्त किया लेकिन मानवता नहीं। ऐसी विपरीत स्थितियों में वे बौद्ध धम्म की ओर आकृष्ट हुए जो मानवता, अहिंसा, प्रज्ञा, शील, करूणा अदि मूल्यों पर खड़ा था। इन सभी मूल्यों को अपनाकर सम्राट अशोक, अजातशत्रु, बिम्बसार आदि राजा जीवन के अन्तिम क्षणों तक बौद्ध धम्म क प्रचार-प्रसार करते रहे। उन सम्राटों को ही हिंदी नाटककारों ने अपने नाटकों का मूल विषय बनाया और सामाजिक विसंगतियों से जूझनेवाले समाज को आदर्श समाज बनाने की प्रेरणा देकर उसे नाटकीय रूपों में प्रस्तुत किया। आज भी कई ऐसे आधुनिक अशोक, बिम्बसार, अजातशत्रु है जो किसी के बहकावें में आकार पल-पल हिंसा, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि को अपना हथियार बनाकर सामान्य जनता को पीड़ित कर रहे हैं। उन्हें मानवता के रास्ते पर लाने का कार्य आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण हैं। हिन्दी साहित्य ने तो इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। विशेषतः हिन्दी साहित्यकारों ने नाटकों के माध्यम से इस बात को बखूबी अंजाम दिया और साहित्य का समाज के प्रति दायित्व भी दिखाया है। इसलिए समतावादी, न्यायपूर्ण, बंधुभाव का संदेश समाज एवं इस तरह की विंसगतियों तक पहुँचने की दृष्टि से इस विषय का महत्त्व एवं आवश्यकता निसंदिग्ध है।

आज की बदलती परिस्थितियों में हम कहीं-न-कहीं हमारे पूर्वजों के विचारों की अवहेलना कर रहे हैं। इसलिए उनके विचार को संभालना और प्रचार-प्रसार करना हमारा परम कर्तव्य है। हमारे सभी महापुरूष मानवता की नींवपर चलने के लिए हमें प्रेरण देते हैं।

उनके विचारों को समझने की आज काफी आवश्यकता हैं। इसलिए प्रस्तुत विषय का चयन किया गया है।

शोध प्रबंध की व्याप्ति :

प्रत्येक अनुसंधान कार्य अपनी सीमा और व्याप्ति में ही संपन्न होता है। उसे अपने सुचारू संचलन से ही अनुसंधान कार्य में स्तरीयता और सुनियेजितता आ जाती है। अध्ययन की सुविधा के लिए हमने अपने शोध विषय "स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव" को कुल छः अध्यायों में विभाजीत किया है। वे इस प्रकार है -

१. प्रथम अध्याय :	**बौद्धदर्शन का सैद्धांतिक, दार्शनिक विवेचन।**
२. द्वितीय अध्याय :	**स्वतंत्रता पुर्व हिंदी नाट्य साहित्य लेखन की परम्परा ।**
३. तृतीय अध्याय :	**बौद्धदर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटक तथा नाटककारों का सामान्य परिचय।**
४. चतुर्थ अध्याय :	**बौद्ध दर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों के अनुशीलन।**
५. पंचम अध्याय :	**बौद्ध दर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों के चरित्र।**
६. छठा अध्याय :	**उपसंहार।**

प्रथम अध्याय

बौद्ध दर्शन का सैद्धांतिक, दार्शनिक विवेचन

वर्तमान समय में दर्शनशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में 'दर्शन' शब्द का अर्थ, परिभाषा, व्याप्ति को स्पष्ट करते हुए भारतीय दर्शन परम्परा के संक्षिप्त इतिहास का अध्ययन किया है। साथ भगवान बुद्ध का जन्म, गृहत्याग, संबोधी प्राप्त, धम्मचक्र परिवर्तन और उनके दार्शनिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया है।

द्वितीय अध्याय

स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाट्य साहित्य लेखन की परम्परा

प्रस्तुत अध्याय में नाटक का अर्थ, परिभाषा, व्याप्ति को प्रस्तुत करते हुए प्राचीन काल से चली आ रही नाट्य परम्परा और हिंदी नाट्य परम्परों के विकास का अध्ययन किया है।

तृतीय अध्याय

बौद्ध दर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटक तथा नाटककारों का सामान्य परिचय

प्रस्तुत अध्याय में स्वतंत्रतापूर्व बौद्ध दर्शन से प्रभावित हिंन्दी नाटककारों की एवं उनकी कृतियों का सामान्य अध्ययन किया है। इसमें विशेषतः नाटककारों के जीवन-परिचय को प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय

बौद्ध दर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों का अनुशीलन

प्रस्तुत अध्याय में बौद्धदर्शन की विचारधारा को अपना कर जिन नाटककारों ने नाट्य कृतियों का सर्जन किया है। उन सभी कृतियों का अनुशीलन किया है। और वे सभी कृतियाँ वर्तमान संदर्भ मे कितनी प्रासंगिक है इसका विवेचन किया है।

पंचम अध्याय

बौद्ध दर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों के चरित्र

प्रस्तुत अध्याय में बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटकों के चरित्रो का अध्ययन किया है। बौद्ध विचारधारा के प्रज्ञा, शील, करूणा, अहिंसा, दया, मैत्री, प्रेम, समता, बन्धुता, पंचशील, अष्टांगिक मार्गो से प्रभावित स्त्री- पुरूष चरित्रों का अध्ययन किया है।

छठा अध्याय

उपसंहार

समग्र अध्ययन के विवेचन के उपरांत उपसंहार प्रस्तुत किया है।

शोध प्रबंध की मौलिकता :

१. स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी नाटकों पर बौद्धदर्शन का प्रभाव यह शोध कार्य ऐतिहासिक नाट्य साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से शायद यह पहला शोध कार्य संपन्न हो रहा है।
२. इस शोध - प्रबंध में स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी नाटकों का बौद्ध दर्शन की दृष्टि सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया है।
३. प्रस्तुत शोधकार्य में भगवान बुद्ध के विचारों की प्रांसगिकता का विवेचन किया है।
४. प्रस्तुत शोध कार्य में लगभग २० से अधिक नाटकों का अध्ययन किया गया है।

शोध उपलब्धियाँ :

बौद्धदर्शन से प्रभावित स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी नाटकों का अध्ययन करते वक्त निम्नंकित उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं -

१. भारतीय दर्शन परम्परा की जानकारी प्रस्तुत की गयी है।
२. अन्य दर्शन परम्परा में बौद्धदर्शन परम्परा का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है।
३. हिन्दी नाट्य साहित्य लेखन की प्राचीन परम्परा की जानकारी प्राप्त हुई है।
४. हिन्दी नाट्य लेखन में विविध परम्परा के साथ बौद्ध विचारधारा की अलग परम्परा का विकास दिखायी देता है।
५. बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटकों में समता, बन्धुता, एकता का तत्व दृष्टिगोचर होता है।
६. बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटकों में स्त्री-पुरूष समानता दिखायी देती है।
७. बौद्धदर्शन की परम्परा का हिन्दी नाटककारों ने यथायोग्य प्रयोग किया है।

८. बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटक आदर्श समाज की निर्मिती में प्रासंगिक है।

९. बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटककार 'पंचशील' एवं 'अष्टांगिक' मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

१०. बौद्धदर्शन से प्रभावित हिन्दी नाटककार अपने नाटकीय चरित्रों द्वारा वर्तमान समाज में आदर्श चरित्रों का निर्माण करना चाहते हैं।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

प्रस्तुत शोधकार्य के अनुसार निम्नांकित विषयों को लेकर अनुसंधान किया जा सकता है -

१. स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटकों पर बौद्धदर्शन क प्रभाव।

२. स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी और मराठी नाटकों का बौद्धदर्शन की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन।

३. स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी और मराठी नाटकों को बौद्धदर्शन की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन।

४. हिन्दी नाटकों में बौद्धदर्शन से प्रभावित स्त्री चरित्र।

५. हिन्दी नाटकों में बौद्धदर्शन से प्रभावित पुरूष चरित्र।

६. बौद्धदर्शन के प्रचार-प्रसार में हिन्दी नाटकों को भूमिका।

७. हिन्दी नाटकों में बौद्धदर्शन की प्रासंगिकता : एक विवेचन।

अनुसंधानकर्ता ने अपनी विषय सीमा में रहकर प्रस्तुत विषय की यथा संभव चर्चा की है। लेकिन उपर्युक्त विषय स्वतंत्र रूप से अनुसंधान के योग्य है। साथ ही कविता, कहानी, उपन्यास इस विधा में भी बौद्धदर्शन या बौद्ध विचारधारा की प्रांसगिकता की दृष्टि से अध्ययन, अनुसंधान किया जा सकता है। आशा है, भविष्य में अनुसंधानकर्ता उपरोक्त विषय पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य सम्पन्न करेंगे।

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ :

१. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति	-	भारतेन्दु
२. भारत दुर्दशा	-	भारतेन्दु
३. अंधेर नगरी	-	भारतेन्दू
४. पाखण्ड विडंबन	-	भारतेन्दु
५. सत्य हरिश्वन्द्र	-	भारतेन्दु
६. श्री चन्द्रावली	-	भारतेन्दु
७. स्कन्दगुप्त	-	जयशंकर प्रसाद
८. चन्द्रगुप्त	-	जयशंकर प्रसाद
९. जनमेजय क नागयज्ञ	-	जयशंकर प्रसाद
१०. अजातशत्रु	-	जयशंकर प्रसाद
११. विशाखा	-	जयशंकर प्रसाद
१२. कल्याणी - परिणय	-	जयशंकर प्रसाद
१३. सज्जन	-	जयशंकर प्रसाद
१४. राज्यश्री	-	जयशंकर प्रसाद
१५. कामना	-	जयशंकर प्रसाद
१६. करूणालय	-	जयशंकर प्रसाद
१७. अशोक	-	लक्ष्मीनारायण मिश्र
१८. धर्मराज अशोक	-	चतुरसेन शास्त्री
१९. मुक्तिपंथ	-	उदयशंकर भट्ट
२०. सम्राट अशोक	-	दशरथ ओझा
२१. अनघ (गीतीनाटक)	-	मैथिलीशरण गुप्त
२२. ध्यर्मलाभ	-	राधाकृष्ण दास

सहाय्यक ग्रंथ सूची :

१. भगवान बुद्ध और उनका धर्म	-	डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यान

२. बौद्ध धर्म का सार - डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यान
३. हिन्दी नाटक उद्‌भव और विकास - दशरथ ओझा
४. नाटककार डॉ. रामकुमार वर्मा - डॉ. कमल सूर्यवंशी
५. आधुनिक हिन्दी -मराठी नाटक - डॉ. माधव सोनटक्के
६. नाट्यालोचन - डॉ. माधव सोनटक्के
७. नाटक की साहित्यिक संरचना - गोंविद चातक
८. हिन्दी नाटक और मिथक - डॉ. मगन विक्रम
९. भारतेन्दु का नाट्य साहित्य - डॉ. वीरेन्द्र कुमार शुक्ल
१०. हिन्दी नाटक साहित्य का विकास - डॉ. सोमनाथ गुप्त
११. स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक (१९४७ ते १९८४) - डॉ. रमजन्म शर्मा
१२. भारत के लोकनाट्य - शिवकुमर मधूर
१३. बोधिवृक्ष की छाया में - भरतसिंह उपाध्याय
१४. दर्शन बौद्ध दर्शन - डॉ. आगेडकर
१५. भारतीय इतिहास का वैदिक युग - एस.एल. नागोरी
१६. भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय
१७. चार्वाक दर्शन - आ. आनंद झा
१८. भारतीय दर्शन आलोचना और अनुशीलता - डॉ. चंद्रधर शर्मा
१९. भारतीय दर्शन - डॉ. राधाकृष्णन्
२०. प्रसाद के काव्य और नाटकः दार्शनिक स्रोत - डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह

शोध - छात्र

अंकुश मसाजी गायकवाड
हिंदी विभाग
डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद

शोध - निर्देशक

डॉ. हणमंतराव पाटील
सहयोगी प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद